सीरत-ए-सैयदना अली

तालीफ

अलहाफिज अहमद बिन हजरल हैतमी अलमक्की

(909 हिजरी-974 हिजरी)

मुरत्तब

खुसरो क़ासिम

मुतरजिम (हिन्दी)

डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

सीरत-ए-सैयदना अली عليه السلام

तालीफ़

अलहाफ़िज़ अहमद बिन हजरल हैतमी अलमक्की

(909 हिजरी – 974 हिजरी)

मुरत्तब

खुसरो क़ासिम

मुतरजिम (हिन्दी)

डॉ. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

नाम : सीरत-ए-सैय्यदना अली ﷺ

तालीफ : अलहाफ़िज़ अहमद बिन हजरुल हैतमी अलमक्की

मुरत्तब : ख़ुसरो क़ासिम

असिस्टेंट प्रोफेसर

मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट

अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़

उत्तरप्रदेश, भारत

हिन्दी मुतरजिम : डॉ. शहज़ादहुसैन क़ाज़ी

फाउन्डर एन्ड चेरमेन

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन

(अहले सुन्नह),

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत

इतबाअ : अव्वल, **2018**

हदिया : रु. **40/-**

कम्पोसिंग एण्ड प्रिंटिंग : ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह), मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

मिलने का पता

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह)

मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

M o. 8511021786

फ़ेहरिस्त-ए-मज़ामीन

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अर्ज़-ए-मुरत्तब

ألحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين محمد وعلى آله وصحبه اجمعين.

हज़रत अली इब्न-ए-अबी तालिब ﷺ तारीख़-ए-इस्लाम बल्कि तारीख़-ए-इंसानियत की चंद अज़ीम तरीन शख़्सियात में से हैं। इस्लाम की रफ़अत और सरबुलंदी की ईमान अफ़रोज़ दास्तानें उनके नाम के साथ जुड़ी हुई हैं। इनकी अज़्मत व अब्क़रीयत के बेशुमार पहलू हैं, जिन्हें उजागर करने की कोशिश हर दौर के मुसन्निफ़ीन ने की हैं।

हाफ़िज़ इब्न-ए-हजर मक्की ﷺ भी उन लोगों में से हैं जिन्होंने आपके फ़ज़ाइल ओ कमालात को तफ़सील के साथ अपनी मशहूर तस्निफ़ “सवाअक़ महरक़ा” में लिख्रा है। यह किताब इसी के एक बाब का उर्दू तर्जुमा है। मेरी दुआ है कि यह कोशिश अंदल्लाह मक़बूल हो और इस तर्जुमे से उर्दू ख़्वाँ तबक़े को ज़ियादा से ज़ियादा दीनी नफ़ा पहुँचे। (आमीन)

ख़ुसरो क़ासिम
लेक्चरर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी
अलीगढ़ (यू॰पी॰)
28 दिसम्बर, 2002

अर्ज़े मुतरजिम
(अनुवादक का निवेदन)

अल्लाह ﷻ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ! के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ! के रसूल है। अल्लाह ﷻ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"आयत-ए-विलायत"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

आज हमारी आँखों के सामने एक ऐसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमे नासबीय्यत और ख़ारजिय्यत उरुज़ पकड़ रही है, बुग़्ज़े मौला अली ؑ को कुछ फिरका परस्त लोंगों ने ख़ुद के मस्लक का अहम हिस्सा बना दिया है। ऐसे हालात में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के **Mechanical Engineering Department** के **Assistant Professor हज़रत खुसरो क़ासिम साहब** ने जिम्मा उठाया कि ऐसे नासबी, ख़ारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लके अहले सुन्नत में मुहब्बत-ए-अहले बैत ؑ और मुहब्बत-ए-अली ؑ ये शीयत नहीं है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बलकि ये तो अहले सुन्नत का **1400** साल से चला आ रहा मजबूत अक़ीदा है, दीन का मजबूत सतून है। ये बात प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने "शान-ए-अहले बैत" में सिर्फ **20** (बीस) सालो में **160** से भी ज़्यादा किताबे लिखकर बता दिया है। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने इन किताबो में सिर्फ और सिर्फ अहले सुन्नत की किताबो के हवाल पेश किये जो मस्लके अहले सुन्नत के **1400** साल के मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन मुहक़्क़ीन का इकठ्ठा किया हुआ सरमाया है। **1400** साल के इस समन्दर को एक जगह पर इकठ्ठा करने का काम प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने किया हैं. प्रोफेसर साहब ने ख़ुद को अहले सुन्नत कहलाने वाले अहल-ए-हदीस और अहल-ए-देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबो के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब को हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रज़ा ؑ से मिलती है जिसे इस गुलाम ने अपने आँखों से देखी हैं. अल्लाह ﷻ! उनके इस काम का बदला

अता फरमाए और ब-रोज-ए-कयामत उनको, उनकी नस्लों को खातमुन्नबी रसूलल्लाह ﷺ के हाथो जाम-ए-कौसर नसीब फरमाये .... आमीन।

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"खतीब-ए-अहले बैत मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)"** का तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले **"दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)"** का भी शुक्रगुजार हूँ।

अल्लाह ﷻ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह ﷺ व अहल-ए-बैत ؑ की शफाअत नसीब फरमाए !

डो. शहेज़ादहुसैन यासीनमीयां क़ाज़ी

1. मुसन्निफ़ का तअर्रुफ़

→ हाफ़िज़ इब्न-ए-हजर मक्की ﷺ अपने दूर के मशहूर शाफ़ई फ़क़ीह और मुहद्दिस थे। लक़ब शहाबुद्दीन और कुन्नियत अबुल अब्बास थी। नाम-ओ-नसब इस तरह है:

→ अहमद बिन मुहम्मद बिन अली बिन हजर अलहैतमी, अलमक्की, अस्सअदी, अलअंसारी रजब **909** हिजरी में मिस्र की रियासत "अलग़रबिया" के मोहल्ला अबिल्हैतम में पैदा हुए। इब्तेदाई तालीम से फ़राग़त के बाद आला तालीम के लिए **924** हिजरी में जामेअ अज़्हर में दाख़िला लिया।

→ हाफ़िज़ इब्न-ए-हजर मक्की ﷺ ने अपनी नौउम्री के बावजूद जामेअ अज़्हर के असातिज़ा से ख़ूब इस्तेफ़ादा किया। उन फ़ुज़्ला-ए-अस्र से तफ़सीर, हदीस, फ़िक़ह, उसूल-ए-फ़िक़ह, इल्म-ए-कलाम, तसव्वुफ़, फ़राइज़, नहव-ओ-सरफ़, मआनी-ओ-बलाग़त, और मंतक़-ओ-हिसाब वग़ैरह उलूम में ख़ुसूसी महारत हासिल की। हिफ़्ज़-ओ-ज़ब्त की सलाहियत भी क़ुदरत की तरफ़ से बतौर-ए-ख़ास अता हुई थी, जिस का नतीजा था कि बीस साल की उम्र में दीनियात और फ़िक़ह में इम्तियाज़ी शान पैदा हो गई और फिर इफ़्ता और दर्स-ओ-तदरीस का इजाज़ा भी मिल गया।

→ **940** हिजरी में तीसरी बार हज्ज-ए-बैतुल्लाह के लिए निकले और फिर मक्का में ही मुस्तक़िल सुकूनत इख़्तियार कर ली। दर्स-ओ-तदरीस और तस्नीफ़-ओ-तालीफ़ का सिलसिला ताहयात जारी रहा। फ़तवा नवीसी में आप को इस क़दर शोहरत हासिल हुई कि दूर दराज़ मक़ामात से लोग इनसे फ़त्वा तलब करने के लिए आया करते थे।

→ आप ने **23** रजब **974** हिजरी को मक्का मुकर्रमा में वफ़ात पाई और अलमअलात में दफ़्न किए गए। अल्लाहुम्मग़फ़िरला वर्रहमा।

→ आपका शुमार कसीरुल तसानीफ़ उल्मा में होता है। आपकी जो किताबें अब तक शाइये हो चुकी हैं उन की तादाद भी कुछ कम नहीं है। लेकिन अभी जिनकी इशाअत नहीं हो सकी है और जो दुनिया की मुख़्तलिफ़ लाइब्रेरियों में मख़्तूतात की शक्ल में मौजूद हैं, उनकी तादाद कहीं ज़ियादा है। अगली सफ पर चंद मशहूर मतबूआ तसानीफ़ के नाम दिये गए हैं।

(۱) تحفة المحتاج لشرح المنهاج (۲) الفتاوى الكبرى الفقهية (۳) الفتاوى الحديثية (۴) الصواعق المحرقة فى الرد على اهل البدع والزندقة (۵) تطهير الجنان واللسان من الخطور والتفوه بثلب سيدنا معاوية بن أبى سفيان (٦) الزواجر من اقتراف الكبائر (٧) كف الرعاع من محرمات اللهو والسماع (٨) الاعالم بقواطع الاسلام (٩) المنح المكية فى شرح الهمزية (١٠) الجوهر المنظم فى زيارة القبر المكرم (١١) الخيرات الحسان فى مناقب الامام ابوحنيفة النعمان (١٢) النخب الجليلة فى الخطب الجزيلة (١٣) حاشية على ايضاح الامام النووى فى مناسک الحج (١۴) المقدمة الحضرمية (١۵) تحفة الاخيار فى مولد المختار (١٦) فتح المبين فى شرح الاربعين النووية (١٧) شرح لقصيدة البردة (١٨) فتح الجواد فى شرح الارشاد.

2. हज़रत अली ﷺ के फ़ज़ाइल

→ हज़रत अली ﷺ के फ़ज़ाइल बहुत हैं, वह इतने मारूफ़ और अज़ीमुश्शान हैं कि इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ फ़रमाते हैं:

ما جاء لأحد من الفضائل ما جاء لعلى.

"हज़रत अली ﷺ की फ़ज़ीलत से मुता'ल्लिक़ जितनी रिवायात मरवी हैं उतनी किसी और के लिए नहीं हैं।"

→ इस्माईल क़ाज़ी ﷺ, इमाम निसाई ﷺ और अबू अली ﷺ अलनीसापुरी कहते हैं:

لم يرد فى حق أحد من الصحابة بالأسانيد الحسان اكثر ماجاء فى على.

"सहाबा में से किसी के हक़ में इतनी उम्दा और अच्छी सनद के साथ रिवायात नहीं मरवी हैं जितनी अली ﷺ के हक़ में बयान हुई हैं।"

→ आप कितने साल की उम्र में इस्लाम लाए? इस सिलसिले में कई तरह की रिवायात मिलती हैं। बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि आप दस साल की उम्र में इस्लाम लाए। जबकि नौ साल की रिवायात भी हैं। बाज़ रिवायात बताती हैं कि आप आठ साल की उम्र में इस्लाम लाए।

→ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अनस, हज़रत ज़ैद बिन अरक़म, हज़रत सलमान फ़ारसी और दीगर हज़रात सहाबा ﷺ बयान करते हैं कि हज़रत अली

ﷺ सब से पहले इस्लाम लाए थे। बाज़ लोगों ने तो इस बात पर इजमाअ नक़ल किया है। **हज़रत अली ﷺ का अपना बयान यह है कि नबी करीम ﷺ पीर के दिन नबी बनाए गए और मैं मंगल को इस्लाम ले आया था। (मुस्नद अबी यअली)**

→ हसन बिन ज़ैद ﷺ बयान करते हैं कि **हज़रत अली ﷺ ने बचपन में कभी बुतों की परस्तिश नहीं की, इस वजह से आपको कर्रमल्लाहु वजहहू के लक़ब से याद किया जाता है।** बुतों की परस्तिश न करने की वजह से आपको "सिद्दीक़" भी कहा जाता है। आप का शुमार उन दस सहाबा किराम में होता है जिन को नबी अकरम ﷺ ने दुनिया ही में जन्नत की ख़ुशख़बरी दी थी। आपसे नबी अकरम ﷺ ने रिश्ता-ए-मुवाख़ात (Brotherhood) क़ायम फ़रमाया और अपनी बेटी, सारी दुनिया की औरतों की सरदार हज़रत फ़ातिमा ﷺ से निकाह कर के आप को शर्फ़-ए-दामादी अता की।

→ जब रसूल-ए-अकरम ﷺ ने मक्का से मदीना की तरफ़ हिजरत फ़रमाई तो हज़रत अली ﷺ को हुक्म दिया कि चंद रोज़ मक्का में क़याम करें और अहल-ए-मक्का की अमानतें उन को वापस कर दें जो रसूल-ए-अकरम ﷺ के पास थीं। इसके बाद आपके अहल के साथ मदीना आ जाएँ। हज़रत अली ﷺ ने इस हुक्म की तामील फ़रमाई। हज़रत अली ﷺ ग़ज़वा-ए-तबूक के अलावा तमाम ग़ज़वात में रसूल-ए-अकरम ﷺ के साथ रहे। ग़ज़वा-ए-तबूक के मौक़े पर आप ﷺ ने हज़रत अली ﷺ को मदीना में अपना ख़लीफ़ा बनाया था और फ़रमाया था कि मेरी नज़र में तुम्हारी वही मंज़िलत है जो हज़रत मूसा ﷺ की नज़र में हज़रत हारुन ﷺ की थी।

→ आपने तमाम ग़ज़वात में नुमायाँ कारनामे अंजाम दिये। ग़ज़वा-ए-उहद में आपको सोलह ज़ख़्म आए थे। अक्सर जंगों में रसूलल्लाह ﷺ अलम आपको अता किया था, ख़ास तौर पर ग़ज़वा-ए-ख़ैबर में फ़तह आपके हाथों हुई थी। आपने उस

दरवाज़े को उखाड़कर फेंक दिया था, जिसे चालीस आदमी भी बमुश्किल हिला पाते थे।

→ ज़ैल में हम हज़रत अली ﷺ के फ़ज़ाइल से मुता'ल्लिक़ चालीस अहादीस नक़्ल करते हैं:

1. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी, हज़रत अस्मा बिन्त-ए-उमैस, हज़रत उम्म-ए-सलमा, हज़रत हुबैश बिन जनादा, हज़रत इब्न-ए-उमर, हज़रत इब्न-ए-अब्बास, हज़रत जाबिर बिन समरा, हज़रत बरा बिन आज़िब और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने ग़ज़वा-ए-तबूक के मौक़े पर हज़रत अली ﷺ को मदीना में अपना जाँनशीन मुक़र्रर फ़रमाया। आपने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! आप मुझे औरतों और बच्चों पर ख़लीफ़ा बनाते हैं।" आपने ﷺ फ़रमाया: "क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुमको मुझ से वो मंज़िलत हासिल हो जो हारून ﷺ को मूसा ﷺ से हासिल थी, हाँ मगर मेरे बाद कोई नबी न होगा।" **(बुख़ारी, मुस्लिम, मुस्नद अहमद, मुस्नद-ए-बाज़ार, तबरानी)**

2. हज़रत सहल बिन साद, हज़रत इब्न-ए-उमर, हज़रत इब्न-ए-अबी लैला, हज़रत इमरान बिन हिस्सीन, और हज़रत इब्न-ए-अब्बास ﷺ बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के दिन फ़रमाया: "मैं कल एक ऐसे शख़्स को अलम दूँगा जिसके हाथ पर अल्लाह ﷻ फ़तह देगा। वो अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ को दोस्त रखता है और अल्लाह ﷻ और उसके रसूल उसको दोस्त रखते हैं।" तमाम लोगों ने रात बात-चीत में गुज़ारी कि देखिये सुबह अलम किसके हाथ में मिलता है। सुबह के वक़्त तमाम लोग इस उम्मीदमें हाजिर-ए-ख़िदमत हुए कि अलम मुझे मिलेगा। रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: "अली कहाँ हैं?" अर्ज़ किया गया कि "उन की आँख में तकलीफ़ है।" आप ﷺ ने फ़रमाया: "उन को यहाँ भेज दो," चुनांचे हज़रत अली ﷺ हाज़िर किए गए। आँ

हज़रत ﷺ ने आपकी आँख में लुआब-ए-दहन लगाया और आप के हक़ में दुआ फ़रमाई। आप अच्छे हो गए। ऐसा मालूम होता था कि आपको कोई तकलीफ़ थी ही नहीं। आप ﷺ ने अलम हज़रत अली ؑ को अता किया और अल्लाह ﷻ ने आपके हाथों पर फ़तह बख़्शी। **(बुख़ारी, मुस्लिम, तबरानी, मुस्नद बाज़ार)**

3. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ؓ से रिवायत है कि जब आयत-ए-करीमा, **"ندع أبناءنا وأبناءكم"** नाज़िल हुई तो आपने अली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन ؑ को बुलाया और कहा: **"ऐ अल्लाह ﷻ ! ये मेरे अहल हैं।" (बुख़ारी, मुस्लिम)**

4. ग़दीर ख़ुम के रोज़ रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

من كنت مولاه فعلى مولاه اللهم وال من والاه وعاد من عاداه.

"जिसका मैं मौला हूँ उसके अली ؑ मौला हैं, ऐ अल्लाह ﷻ ! तू उसको दोस्त रख जो अली ؑ को दोस्त रखे, तू उससे दुश्मनी रख जो अली ؑ से दुश्मनी रखे।" तीस सहाबा किराम ने नबी-ए-अकरम ﷺ से ये रिवायत बयान की है और इस रिवायत की अक्सर सनदें सही या हसन हैं।

5. बुरैदा ؓ से रिवायत है कि रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह ﷻ ने मुझे चार असहाब से मुहब्बत करने का हुक्म दिया है और इस बात से आगाह किया है कि वह ख़ुद भी इन चारों से मुहब्बत फ़रमाता है। अर्ज़ किया गया: "ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! उनके नामों से हमें आगाह फ़रमाएँ।" आप ﷺ ने तीन बार फ़रमाया: अली ؑ उनमें से एक हैं, बाक़ी तीन हज़रत अबूज़र, हज़रत मिक़दाद, और हज़रत सलमान ؓ हैं। **(तिर्मिज़ी, हाकिम)**

6. हज़रत हुबैश बिन जनादा ﷺ बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: अली ﷺ मुझ से हैं और मैं अली ﷺ से हूँ। मेरी तरफ़ से किसी चीज़ की अदायगी का इस्तहक़ाक़ या तो मुझे हासिल है या फिर अली ﷺ को। **(मुस्नद-अहमद, तिर्मिज़ी, निसाई, इब्न-ए-माजा)**

7. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ बयान करते हैं कि नबी-ए-अकरम ﷺ ने अपने असहाब के दरमियान भाईचारा क़ायम किया। उसी दरमियान हज़रत अली ﷺ तशरीफ़ लाए और आपकी दोनों आँखों से आँसू बह रहे थे। अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ आप ने असहाब के माबैन भाईचारा क़ायम किया लेकिन मैं अभी तक उससे महरूम हूँ।" ये सुनकर आप ﷺ ने फ़रमाया: "अली ﷺ! दुनिया और आख़िरत में तुम मेरे भाई हो।" **(तिर्मिज़ी)**

8. हज़रत ﷺ बयान करते हैं कि क़सम है उस ज़ात की जिस ने दाने में शिगाफ़ डाला और रुह को पैदा किया। नबी-ए-अकरम ﷺ ने मुझ से अहद-ओ-पैमान के अंदाज़ में फ़रमाया था कि **"मुझे मोमिन दोस्त रखेगा और मुनाफ़िक़ मुझसे इनाद रखेगा।"** (मुस्लिम) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ बयान करते हैं कि हम मुनाफ़िक़ीन को अली ﷺ से बुग्ज़ रखने की वजह से पहचानते थे। **(तिर्मिज़ी)**

9. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, और हज़रत अली ﷺ बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"मैं शहर-ए-इल्म हूँ और अली उस का दरवाज़ा हैं।"** एक रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है: "जो हुसूल-ए-इल्म का ख़्वाहिशमंद हो उसे दरवाज़े पर आना चाहिए।" एक रिवायत में यह है: **"मैं बैत-ए-हिक्मत हूँ और अली ﷺ उसका दरवाज़ा हैं।"** एक रिवायत में है: **"हज़रत अली ﷺ मेरे इल्म का दरवाज़ा हैं।"** (मुस्नद बाज़ार, तबरानी, हाकिम, अलअक़ीली, इब्न-ए-अदी, तिर्मिज़ी)

10. हज़रत अली ﷺ बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ﷺ जब मुझे यमन की तरफ़ भेजने लगे तो मैं ने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! आप मुझ जैसे जवान आदमी को अहले यमन के दरमियान क़ाज़ी बना कर भेज रहे हैं, जबकि क़ज़ा की हक़ीक़त का मुझे इल्म ही नहीं है।" यह सुनकर आपने मेरे सीने पर हाथ मारा और ये दुआ फ़रमाई: "ऐ अल्लाह ﷻ! इसके दिल को हिदायत दे और इसकी ज़ुबान को सबात ओ इस्तहकाम अता फ़रमा।" हज़रत अली ﷺ बयान करते हैं कि "क़सम है उस ज़ात की जिसने दाने में शिगाफ़ डाला, उसके बाद दो आदमियों के दरमियान फ़ैसला करने में मुझे कभी शक नहीं हुआ।" **(मुस्तदरक अल्हाकिम)**

11. हज़रत अली ﷺ से दरियाफ़्त किया गया कि दीगर असहाब-ए-रसूल ﷺ के मुक़ाबले में आपकी अहादीस ज़ियादा क्यूँ हैं? आप ﷺ ने इसके जवाब में फ़रमाया: **"जब मैं आँ हज़रत ﷺ से अर्ज़ करता था तो आप जवाब देते थे और जब मैं ख़ामोश होता था तो आप ﷺ ख़ुद गुफ़्तगू का आग़ाज़ फ़रमाते थे।" (इब्न-ए-साद)**

12. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"लोग मुख़्तलिफ़ दरख़्तों से पैदा किए गए हैं जबकि मेरी और अली ﷺ की पैदाइश एक ही शजर से हुई है।" (तबरानी फ़िल औसत बसनद ज़ईफ़)**

13. हज़रत साद ﷺ से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने हज़रत अली ﷺ से फ़रमाया: **"मस्जिद (नबवी) में मेरे और तुम्हारे सिवा किसी के लिए जायज़ नहीं है कि वह हालत-ए-जनाबत में रहे।" (मुस्नद बाज़ार)**

14. हज़रत उम्मे सलमा ﷺ बयान करती हैं कि **"रसूल-ए-अकरम ﷺ जब नाराज़ होते थे तो हज़रत अली ﷺ के सिवा कोई आपसे बात करने कि जुरअत न करता था।" (तबरानी, हाकिम)**

15. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ने फ़रमायाः हज़रत अली के चेहरे की तरफ़ देखना इबादत है। **(तबरानी, हाकिम)**

16. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ने फ़रमायाः जिस किसी ने अली को अज़ीयत पहुँचाई, उसने मुझे अज़ीयत पहुँचाई। **(मुस्नद अबी यअली, मुस्नद बज़्ज़ार)**

17. हज़रत उम्मे सलमा से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ने फ़रमायाः जिसने अली को दोस्त रखा उसने मुझे दोस्त रखा और जिसने मुझे दोस्त रखा उसने अल्लाह को दोस्त रखा। इसके बरअक्स जिसने अली से इनाद रखा उसने मुझसे इनाद रखा और जिसने मुझसे इनाद रखा उसने अल्लाह से इनाद रखा। **(तबरानी, बसनद हसन)**

18. हज़रत उम्मे सलमा बयान करती हैं कि मैं ने रसूल-ए-अकरम से सुना, आप इरशाद फ़रमा रहे थेः **"जिसने अली को गाली दी उसने मुझे गाली दी। " (मुस्नद अहमद, हाकिम)**

19. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ने हज़रत अली को मुख़ातिब करके फ़रमायाः **"तुम क़ुरआन की तावील पर उसी तरह जिहाद करोगे जिस तरह क़ुरआन के नुज़ूल पर मैं ने जिहाद किया है।" (मुस्नद अहमद, हाकिम)**

20. हज़रत अली बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ने मुझे बुलाया और फ़रमायाः "तुम पर हज़रत ईसा की मिसाल सादिक़ आती है। यहूदियों ने उनसे इतना बुग्ज़ रखा कि उनकी माँ पर तोहमत लगाई। नसारा ने आपसे मुहब्बत की और वह दर्जा दिया जिसके आप मुस्तहक़ न थे।" हज़रत अली ने फ़रमायाः "तुम्हें यकीन होना चाहिए कि मेरे मुता'ल्लिक़ दो तरह के लोग हलाक

हो जाएंगे। ज़ियादा मुहब्बत करनेवाला मुझे उस मरतबे पर ले जाएगा जिसका मैं मुस्तहक़ नहीं और मुझ से बुग्ज़ रखनेवाले को मेरी दुश्मनी इस बात पर ले जाएगी कि वह मुझ पर बोहतान बाँधेगा।" (मुस्नद बाज़ार, मुस्नद अबी यअली, हाकिम)

21. हज़रत उम्मे सलमा ﷺ से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"अली ﷺ क़ुरआन के साथ हैं और क़ुरआन अली ﷺ के साथ है। दोनों एक दूसरे से कभी जुदा न होंगे यहाँ तक कि हौज़-ए-कौसर पर भी दोनों साथ साथ आएँगे।" (तबरानी)**

22. हज़रत अम्मार बिन यासिर ﷺ बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने हज़रत अली ﷺ को मुख़ातिब करके फ़रमाया: "ऐ अली ﷺ! बदबख़्ततरीन इंसान दो हैं, एक अहमर समूद, जिसने ऊँटनी की कूचें काट डाली थीं और दूसरा वो शख़्स जो आपके सर पर ज़र्ब लगाएगा, जिससे आपकी दाढ़ी तर हो जाएगी।" (मुस्नद अहमद) यह रिवायत हज़रत अली, हज़रत सुहैब और हज़रत जाबिर बिन समरा ﷺ से भी मरवी है।

→ इब्न-ए-सलाम ने आपसे अर्ज़ किया था कि आप इराक़ तशरीफ़ न ले जाएँ, मुझे अंदेशा है कि आप वहाँ तलवार कि ज़द में आ जाएँगे। हज़रत अली ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह ﷻ कि क़सम! मुझे तो इस बात की अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ने ख़बर दी थी।" अबू असद रुमी का बयान है कि **"मैं ने हज़रत अली ﷺ के सिवा किसी शख़्स को नहीं देखा जो अपनी शहादत के मुता'ल्लिक़ दूसरों को आगाह करता हो।"**

23. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ बयान करते हैं कि एक बार लोगों ने हज़रत अली ﷺ की शिकायत की। रसूल-ए-अकरम ﷺ शिकायत सुनकर ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए और फ़रमाया: "तुम लोग अली ﷺ की शिकायत न करो, क्यूँकि वो अल्लाह ﷻ कि ज़ात के मुआमले में ज़ियादा सख़्त हैं या अल्लाह ﷻ की राह में।" (मुस्तदरक लिल्हाकिम)

24. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे हज़रत अली ﷺ के दरवाज़े के सिवा बाक़ी तमाम दरवाज़ों के बंद करने का हुक्म दिया गया है।" इस बारे में किसी कहने वाले ने कुछ कहा है। "अल्लाह ﷻ की क़सम! मैं ने न किसी चीज़ को अपनी मर्ज़ी से बंद किया है और न उसको खोला है। मुझे तो जिस बात का हुक्म दिया गया है सिर्फ़ उसकी तामील की है।" **(मुस्नद अहमद, अलमुख़्तारह)**

25. हज़रत इमरान बिन हिस्सीन ﷺ से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: "तुम लोग अली ﷺ से क्या चाहते हो? (तीन बार फरमाया) अली ﷺ मुझसे हैं और मैं अली ﷺ से हूँ और वह मेरे बाद हर मोमिन के वली हैं।" **(तिर्मिज़ी, हाकिम)**

26. हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-ए-मसऊद ﷺ बयान करते हैं कि नबी-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे अल्लाह ﷻ कि तरफ़ से हुक्म मिला है कि मैं फ़ातिमा ﷺ का निकाह अली ﷺ से कर दूँ।" **(तबरानी)**

27. हज़रत जाबिर और हज़रत इब्न-ए-अब्बास رضی اللہ عنہم से मरवी है कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"अल्लाह ﷻ ने हर नबी ﷺ की औलाद उसकी पुश्त में क़रार दी है और उसने मेरी औलाद को अली ﷺ की पुश्त में क़रार दिया है। (तबरानी, ख़तीब)**

28. हज़रत आयशा ﷺ बयान करती हैं कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: "अली ﷺ मेरे सब से बेहतरीन भाई हैं और हमज़ा ﷺ सबसे अच्छे चचा हैं।" (देलमी)

29. हज़रत आयशा ﷺ और हज़रत इब्न-ए-अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: सब्क़त करनेवाले तीन असहाब हैं। हज़रत मूसा ﷺ की तरफ़ यूशअ बिन नून, हज़रत ईसा ﷺ की तरफ़ साहिब-ए-यासीन, और

हज़रत मुहम्मद ﷺ की तरफ़ अली बिन अबी तालिब رضي الله عنه। (देलमी, तबरानी, इब्न-ए-मरदविया)

30. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"सिद्दीक़ तीन असहाब हैं, हज़्क़ील जो आल-ए-फ़िरऔन के मोमिन थे, हबीब नज्ज़ार जो आल-ए-यासीन के मोमिन थे, और हज़रत अली رضي الله عنه।" (इब्नुल नज्ज़ार)**

31. हज़रत इब्न-ए-अबी लैला رضي الله عنه बयान करते हैं कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"सिद्दीक़ तीन हैं, हबीब नज्ज़ार, मोमिन आल-ए-यासीन, जिसने कहा था: ऐ मेरी क़ौम! रसूलों की पैरवी करो, हज़्क़ील मोमिन आल-ए-फ़िरऔन जिस ने कहा था कि तुम उस शख़्स को क़त्ल करते हो जो कहता है कि मेरा रब अल्लाह ﷻ है और तीसरे सिद्दीक़ अली बिन अबी तालिब رضي الله عنه हैं।" (अबू नईम, इब्न-ए-असाकिर)**

32. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: "अली رضي الله عنه नेकोकारों के इमाम और बदकारों के क़ातिल हैं। जिसने उनकी मदद की वह नुसरत याफ़्ता है और जिस ने उनको छोड़ दिया वह बेयार ओ मददगार है।" **(हाकिम)**

33. हज़रत अनस رضي الله عنه बयान करते हैं कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"मोमिन की किताब का उनवान अली बिन अबी तालिब की मुहब्बत है।" (ख़तीब)**

34. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"अली رضي الله عنه बाब-ए-हत्ता हैं। जो उनमें से दाख़िल होगा वह मोमिन होगा और जो उससे निकल जाएगा वह काफ़िर होगा।" (दार-ए-फ़ितना फ़ी किताबुल अफ़राद)**

35. हज़रत बरा बिन आज़िब और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهم से मरवी है कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **“अली عليه السلام जन्नत में इस तरह रौशन होंगे जिस तरह सुबह का सितारा दुनियावालों के लिए रौशन होता है। (ख़तीब, देलमी)**

36. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **“अली عليه السلام को मुझ से वह मंज़िलत हासिल है जो मेरे सर को मेरे बदन से है।” (बैहक़ी, देलमी)**

37. हज़रत अली عليه السلام बयान करते हैं कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: “अली عليه السلام मोमिनों के यासूब (सरदार) हैं और माल मुनाफ़िक़ीन का यासूब (सरदार) होता है।” **(इब्न-ए-अदी)**

38. हज़रत अनस رضي الله عنه की रिवायत है कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: “अली عليه السلام मेरा क़र्ज़ अदा करेंगे।” **(मुस्नद बाज़ार)**

39. हज़रत अनस رضي الله عنه बयान करते हैं कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: जन्नत तीन आदमियों की मुश्ताक़ है और वो हैं: “अली عليه السلام, अम्मार رضي الله عنه, सलमान رضي الله عنه”। **(तिर्मिज़ी, हाकिम)**

40. हज़रत सहल बिन साद رضي الله عنه से मरवी है कि रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली عليه السلام को मस्जिद में लेटे हुए पाया। चादर का एक हिस्सा आपके पहलू से अलग हो गया था और आप को मिट्टी लग गई थी। रसूल-ए-अकरम ﷺ ने मिट्टी को साफ करना शुरू किया और मिट्टी साफ करते जाते और फ़रमाते जाते: “ऐ अबू तुराब عليه السلام!” उठो। “यह कुन्नियत हज़रत अली عليه السلام को दीगर तमाम कुन्नियात से ज़ियादा महबूब थी, क्यूँ कि यह कुन्नियत रसूलल्लाह ﷺ ने दी थी।”

3. सैयदना अली ؑ की शख़्सियत

सहाबा किराम और दीगर सलफ़-ए-स्वालेहीन की नज़र में

1. हज़रत अबू हुरैरह ؓ बयान करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ؓ ने फ़रमाया: **"हज़रत अली ؓ हमारे दरमियान सबसे बड़े क़ाज़ी हैं।"** (इब्न-ए-साद)

2. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ फ़रमाते हैं: **"अहल-ए-मदीना में सबसे ज़ियादा अच्छा फ़ैसला करनेवाले हज़रत अली ؓ हैं।"** (अलहाकिम)

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ फ़रमाते हैं: जब कोई सिक़्क़ा(Trustworthy) आदमी हमसे हज़रत अली ؓ के हवाले से कोई फ़तवा बयान करता था तो हम उससे तजाउज(इनकार) नहीं करते थे। (इब्न-ए-साद)

4. सैयदुलताबईन हज़रत सईद बिन मुसय्यब ؓ बयान करते हैं कि **हज़रत उमर ؓ हर ऐसे पेचीदा मसअले से अल्लाह ﷻ की पनाह माँगते थे जिसके हल करने के लिए हज़रत अली ؓ मौजूद न हों। (इब्न-ए-साद)**

5. सईद बिन मुसय्यब ؓ बयान करते हैं कि **हज़रत अली ؓ के सिवा सहाबा किराम में कोई ऐसा नहीं था जो यह कहता हो कि मुझसे जो मसअला चाहो दरियाफ़्त कर लो। (इब्न-ए-साद)**

6. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ बयान करते हैं: मदीनावालों में इल्म-ए-फ़राइज़ के सबसे ज़ियादा जानने वाले और उनमें सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाले हज़रत अली ؓ थे। (इब्न-ए-साद)

7. हज़रत आयशा ؓ के सामने हज़रत अली ؓ का तज़्किरा हुआ तो आपने फ़रमाया: "वो ज़ुबान-ओ-अदब के सबसे ज़ियादा वाक़िफ़कार थे।" (इब्न-ए-असाकिर)

8. मसरूक़ का बयान है कि सहाबा किराम के उलूम के जामेअ तीन हज़रात, हज़रत उमर, हज़रत अली और हज़रत इब्न-ए-मसऊद ﷺ हैं। (इब्न-ए-असाकिर)

9. अब्दुल्लाह बिन अब्बास बिन अबी रबीआ ﷺ कहते हैं: हज़रत अली ﷺ अलम के आला मक़ाम पर फ़ाइज़ थे, आपको इस्लाम लाने में शर्फ़ ओ तक़द्दुम हासिल है, आप दामाद-ए-रसूल हैं, आप इल्म-ए-फ़िक़ह, इल्म-ए-लुग़त, मैदान-ए-कारज़ार में बहादुरी व शुजाअत और सख़ावत ओ फ़ैयाज़ी में मुमताज़ हैं। (इब्न-ए-असाकिर)

10. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ बयान करते हैं कि हज़रत उमर ﷺ ने फ़रमाया: हज़रत अली ﷺ को तीन ऐसी ख़ूबियाँ अता हुई हैं कि अगर उनमें से कोई एक मुझे मिलती तो सुर्ख़ ऊँटों से ज़ियादा अज़ीज़ होती। जब उनसे इन ख़ूबियों कि बाबत दरियाफ़्त किया गया तो फ़रमाया: नबी अकरम ﷺ का अपनी बेटी से आपकी शादी करना, मस्जिद में आपका सुकूनत इख़्तियार करना, मस्जिद में जो चीज़ उनके लिए हलाल थी, किसी और के लिए हलाल न थी और आपको ख़ैबर के दिन अलम का मिलना। (मुस्नद अबी यअली)

11. हज़रत अली ﷺ बयान करते हैं कि ख़ैबर के रोज़ जब नबी अकरम ﷺ ने मुझे अलम अता किया था, उस मौक़े पर आपने मेरे चेहरे पर अपना दस्त-ए-मुबारक फेरा था और मेरी आँख में अपना लुआब-ए-दहन लगाया था। उस रोज़ के बाद न कभी मेरी आँख में तकलीफ़ हुई और न मुझे कभी दर्द हुआ। (मुस्नद अहमद, मुस्नद अबी यअली)

12. हज़रत अली ﷺ जब कूफ़ा तशरीफ़ ले गए तो अरब का एक हकीम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया: **"अल्लाह ﷻ की क़सम ऐ अमीरुल मोमिनीन ﷺ ! आपने ख़िलाफ़त को बुलंदी का दर्जा अता किया है। ख़िलाफ़त ने आपको कोई बुलंदी नहीं बख़्शी और ख़िलाफ़त ये मदारिज तय करने के लिए आपकी मोहताज थी।"**

4. हज़रत अली ﷺ के पाकीज़ा अहवाल
जिन में आपके इल्म, ज़ुह्द, करामत और क़ज़ा का तज़्किरा है

1. हज़रत अली ﷺ बयान करते हैं: "अल्लाह ﷻ की क़सम! क़ुरआन की जो आयत भी नाज़िल हुई, मुझे उसके बारे में अच्छी तरह मालूम है कि क्यूँ नाज़िल हुई, कहाँ नाज़िल हुई और किसके ख़िलाफ़ नाज़िल हुई? मुझे मेरे रब ने फ़हम ओ बसीरत से मुज़य्यन दिल और फ़साहत ओ बलाग़त से आरास्ता ज़ुबान अता फरमाई है।" (इब्न-ए-साद)

2. हज़रत अबू तुफ़ैल ﷺ से रिवायत है कि हज़रत अली ﷺ ने फरमाया: मुझसे अल्लाह ﷻ की किताब के मुता'ल्लिक़ सवालात करो, क्यूँकि उस की कोई आयत ऐसी नहीं है जिसके मुता'ल्लिक़ मुझे इल्म न हो। ख़्वाह वह रात में नाज़िल हुई हो या दिन में, मैदान में उतरी हो या पहाड़ पर। (इब्न-ए-साद वग़ैरह)

3. मुहम्मद बिन सीरीन ﷺ बयान करते हैं कि जब नबी अकरम ﷺ का इंतेक़ाल (वफ़ात) हो गया तो हज़रत अली ﷺ ने हज़रत अबू बक्र ﷺ के हाथ पर बैअत करने में ताख़ीर की। हज़रत अबू बक्र ﷺ ने आपसे मुलाक़ात की और कहा: "क्या आपको मेरी ख़िलाफ़त नापसंद है?" यह सुन कर हज़रत अली ﷺ ने फ़रमाया: "नहीं, यह बात नहीं, अलबत्ता मैंने यह क़सम ख़ा रखी है कि नमाज़ के सिवा चादर उस वक़्त तक न ओढूँ जब तक क़ुरआन मजीद को जमा न कर दूँ," लोगों का ख़याल है कि आपने जो नुस्ख़ा तैयार किया था उस में तंज़ील के मुताबिक़ तरतीब क़ायम कि थी। मुहम्मद बिन सीरीन ﷺ कहते हैं: "अगर वह नुस्ख़ा हमारे हाथ आता तो उसमें इल्म की बेशक़ीमत बातें मिलतीं।" (इब्न-ए-अबी दाऊद)

4. हज़रत अली ﷺ की रौशन करामात में से एक करामत यह है: एक मर्तबा नबी अकरम ﷺ का सर मुबारक आपकी गोद में था और आँ हज़रत ﷺ पर वही

नाज़िल हो रही थी। वही का सिलसिला उस वक़्त ख़त्म हुआ जब सूरज गुरूब हो चुका था। हज़रत अली ﷺ ने अस्र की नमाज़ अदा नहीं की थी और आपकी ख़ातिर सूरज वापस लौट आया था। रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ अल्लाह ﷻ! अली ﷺ तेरी और तेरे रसूल ﷺ की इताअत में थे, उनकी ख़ातिर सूरज को वापस लौटा दे, चुनांचे गुरूब होने के बाद सूरज वापस लौट आया था।"

→ **"हदीस-ए-रद्दुल शम्स" को इमाम तहावी ﷺ ने और क़ाज़ी अयाज़ ﷺ ने अपनी किताब "अशशिफ़ा" में सहीह क़रार दिया है, जबकि शेखुल इस्लाम अबू ज़रआ ﷺ ने इस रिवायत को हसन कहा है। बाज़ दूसरे हज़रात ने भी उनकी ताईद की है। इन लोगों ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर उन हज़रात की तरदीद की है जो इस रिवायत को मौज़ूअ क़रार देते हैं।**

5. हज़रत अली ﷺ के हाथों एक करामत का ज़हूर इस तरह हुआ कि एक बार कोई बात बयान फ़रमाई। एक शख़्स ने उस बात को झुठला दिया। आपने फ़रमाया: "अगर झूठे हो तो मैं तुम्हारे बारे में बददुआ करूँगा।" उसने कहा: "आप ज़रूर करें।" आपने उस पर बददुआ फ़रमा दी। उस बददुआ का असर यह हुआ कि अभी वह अपनी जगह से हिलने भी न पाया था कि उसकी बीनाई (आँखो की रोशनी) जाती रही।

6. इब्नुल मदायनी ﷺ ने एक जमाअत से यह रिवायत बयान की है कि हज़रत अली ﷺ बैतुल माल में झाड़ू दे कर नमाज़ पढ़ा करते थे, ताकि इस बात का मुशाहिदा किया जा सके कि आपने बैतुल माल में मुसलमानों का माल बंद नहीं रखा है।

7. दो आदमियों ने एक साथ मिल कर खाना खाने का इरादा किया। एक के पास पाँच रोटियाँ थीं, दूसरे के पास तीन थीं। एक तीसरा शख़्स भी वहाँ आ गया, दोनों ने उसे भी खाने में शरीक कर लिया। सबने मिल कर बराबर बराबर रोटियाँ खाईं। तीसरे शख़्स ने दोनों को आठ दिरहम दिये। जिसकी पाँच रोटियाँ थीं उसने ख़ुद पाँच दिरहम ले लिए और बाक़ी तीन अपने साथी को दे दिये जिसकी तीन रोटियाँ

थीं, लेकिन तीन रोटी वाले साथी ने चार दिरहम का मुतालिबा किया। यह दोनों अपना मुआमिला हज़रत अली ﷺ के पास ले गए। आपने मुआमिले कि तफसील सुन कर फ़रमाया: "तुम दोनों ने एक मामूली बात पर झगड़ा कर रखा है। आपने तीन रोटी वाले से कहा कि जिस बात पर तेरा साथी राज़ी है वही तीन दिरहम ले लो, वे तुम्हारे हक़ में बेहतर हैं।" उसने कहा: "मैं तो सिर्फ़ दलील पर मुतमइन हूँगा।" हज़रत अली ﷺ ने फ़रमाया: "अगर दलील चाहते हो तो सुनो, तुम्हारे हिस्से में सिर्फ़ एक दिरहम आता है।" उस शख़्स ने कहा, "यह कैसे?" आप ﷺ ने फ़रमाया: "तीन आदमियों ने आठ रोटियाँ खाई हैं। तुम में से किसी ने ज़ियादा रोटियाँ नहीं खाई बल्कि बराबर खाई हैं। आठ रोटियों के चौबीस टुकड़े किए जाते हैं। हर एक आदमी ने आठ टुकड़े खाए। तीन रोटी वाले की रोटियों के नौ टुकड़े हुए। उसने आठ टुकड़े ख़ुद खाए और उसका सिर्फ़ एक टुकड़ा बाक़ी रहा। पाँच रोटी वाले के पंद्रह टुकड़े हुए। उसने आठ टुकड़े ख़ुद खाए और उसके सात टुकड़े बचे रहे। ये सात टुकड़े उसके खाने से ज़ियादा हैं। उस शख़्स को सात दिरहम लेना चाहिए और तीन रोटी वाले का सिर्फ़ एक टुकड़ा बचा है उसे सिर्फ़ एक दिरहम लेना चाहिए।"

5. हज़रत अली عليه السلام
के हकीमाना अक़्वाल व इर्शादात

(1)

الناس نيام فاذا ماتوا انتبهوا.

“लोग ग़फ़लत की नींद सो रहे हैं, जब जिस्म ओ जान का रिश्ता टूट जाएगा तब बेदार होंगे”

(2)

الناس بزمانهم أشبه منهم بآبائهم.

“लोग ज़माने के रंग में ख़ुद को रंग लेते हैं जबकि उनमें सिर्फ़ वही लोग बेहतर हैं जो अपने आबा ओ अजदाद से मुशाबहत रखते हों।”

(3)

لو كشف الغطاما ازددت يقينا.

“अगर पर्दा-ए-ग़ैब भी उठा दिया जाए तो मेरे यक़ीन में कोई इज़ाफ़ा नहीं होगा।”

(4)

ما هلك امرؤ عرف قدره.

“अपनी हैसियत व हक़ीक़त से आशना कभी हलाक नहीं होगा।”

(5)

قيمة كل امرئ ما يحسنه.

“हर शख़्स की क़ीमत का अंदाज़ा उसकी पसंद से लगाया जा सकता है।”

(6)

من عرف نفسه فقد عرف ربه.

“जिसने अपने नफ़्स को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया।”

(7)

المرء مخبوء تحت لسانه.

“इंसान अपनी ज़ुबान के नीचे पोशीदा है।”

(8)

من عذب لسانه كثر اخوانه.

"जिसकी ज़ुबान में मिठास होगी उसके दोस्तों का हल्क़ा वसीअ होगा।"

(9)

بالبر يستعبد الحر.

"नेकी के कामों से गुनाहों की हरारत और सोज़िश को क़ाबू में रखा जा सकता है।"

(10)

بشر مال البخيل بحادث أو وارث.

"बख़ील की दौलत को किसी हादसे से दो-चार होने या किसी वारिस के क़ाबिज़ हो जाने की बशारत सुना दो।"

(11)

لا تنظر الذى قال وانظر إلى ما قال.

"यह न देखो कि किसने कहा बल्कि यह देखो कि क्या कहा।"

(12)

الجزع عند البلاء تمام المحنة.

"मुसीबत के वक़्त वावेला करना अमल को रायगाँ करता है।"

(13)

لا ظفر مع البغى.

"बग़ावत फतहमंदी नहीं है।"

(14)

لا ثناء مع الكبر.

"तकब्बुर के होते हुए कोई तारीफ़ नहीं।"

(15)

لا صحة مع النهم والتخم.

"बदहज़मी के साथ सेहत क़ायम नहीं हो सकती।"

(16)

لاشرف مع سوء الادب.

“बेअदबी से बुज़ुर्गी नहीं मिल सकती।”

(17)

لا راحة مع الحسد.

“हसद के होते हुए आराम नहीं मिल सकता।”

(18)

لاسيادة مع الانتقام.

“बदला लेने से सरदारी नहीं मिल सकती।”

(19)

لاصواب مع ترک المشورة.

“मशवरा छोड़ कर दुरुस्तगी नहीं पाई जा सकती।”

(20)

لا مروءة لكذوب.

“छोटे के अंदर मुरव्वत नहीं होती।”

(21)

لا كرم أعز من التقى.

“परहेज़गारी से बुज़ुर्ग कोई चीज़ नहीं।”

(22)

لا شفيع انجح من التوبة.

“तौबा से ज़ियादा कामयाब कोई सिफ़ारिश नहीं।”

(23)

لا لباس اجمل من العافية.

“सेहत से बढ़ कर कोई ख़ूबसूरत लिबास नहीं।”

(24)

لا داء أعياء من الجهل.

"जहालत से ज़ियादा लाइलाज कोई बीमारी नहीं।"

(25)

المرء عدو ما جهله.

"आदमी जिस चीज़ को नहीं जानता उसका दुश्मन होता है।"

(26)

رحم الله امرأ عرف قدره و لم يتعد طوره.

"अल्लाह ﷻ उस शख़्स पर रहम फ़रमाए जिसने अपनी हक़ीक़त से आशना हो कर भी अपने तर्ज़-ए-अमल को ठीक न किया।"

(27)

اعادة الاعتذار تذكر بالذنب.

"बार बार माज़रत करने से गुनाह की याद ताज़ा होती है।"

(28)

النصح بين الملأ تقريع.

"आम मजमे में नसीहत करना ऐब लगाना है।"

(29)

نعمة الجاهل كروضة على مزبلة.

"जाहिल की नेकी घूरे पर फूलों की क्यारी की तरह है।"

(30)

الحكمة ضالة المومن.

"हिकमत मोमिन की मता-ए-गुमगश्ता है।"

(31)

البخل جامع لمساوئ العيوب.

"कंजूसी तमाम बुराइयों की मुहीत है।"

(32)

اذا حلت المقادير ضلت التدابير.

"जब तक़दीर की कारफ़रमाई होती है तदबीर बेकार हो जाती हैं।"

(33)

الحاسد مغتاظ على من لا ذنب له.

"हासिद उस शख़्स पर नाराज़ होता है जिस का कोई क़ुसूर नहीं होता।"

(34)

كفى بالذنب شفيعا للمذنب.

"गुनाह का मुरतकब होने के लिए सिर्फ़ ये काफ़ी है कि किसी गुनाहगार की सिफ़ारिश की जाए।"

(35)

السعيد من وعظ بغيره.

"नेकबख़्त वह है जो दूसरों से नसीहत हासिल करे।"

(36)

الاحسان يقطع اللسان.

"अहसान ज़ुबान को बंद कर देती है।"

(37)

افقر الفقر الحمق

"बदतरीन मोहताजगी हिमाक़त है।"

(38)

اغنى الغنى العقل.

"सबसे बड़ी मालदारी अक़्लमंदी है।"

(39)

الطامع فى وثاق الذل.

"लालची इंसान ज़िल्लत की रस्सी में बंधा हुआ होता है।"

(40)

احذروا نفار النعم فما شارد بمردود.

"नेअमतों के भाग जाने से बचो और हर भागी हुई चीज़ मरदूद नहीं होती।"

(41)

أكثر مصارع العقول تحت بروق الاطماع.

"आम तौर पर अक़्लों की शिकस्त की वजह लालच की चमक होती है।"

(42)

إذا وصلت اليكم النعم فلا تنفروا اقصاها بقلة الشكر.

"जब तुम्हें नेअमतों मिल जाए तो शुक्र की कमी की वजह से उसे दूर न भगाओ।"

(43)

اذا قدرت على عدوك فاجعل العفو عنه شكر القدرة عليه

"जब तुम दुश्मन पर क़ाबू पा जाओ तो मुआफ़ करने को क़ाबू पाने का शुक्रिया क़रार दो।"

(44)

ما أضمر احد شيئا إلا ظهر من فلتات لسانه وعلى صفحات وجهه.

"जो शख़्स अपने दिल में कोई चीज़ पोशीदा रखता है वह उसकी ज़ुबान की लग़्जिश और चेहरे की रंगत से ज़ाहिर हो जाती है।"

(45)

البخيل يستعجل الفقر و يعيش فى الدنيا عيش الفقراء ويحاسب فى الآخرة حساب الاغنياء.

"बख़ील फुक्र-ओ-मोहताजगी की उजलत मचाए हुए है हालाकि वह दुनिया में फ़क़ीरों जैसी ज़िदगी गुज़ारता है जबकि आख़िरत में उससे मालदारों जैसा हिसाब लिया जाएगा।"

(46)

لسان العاقل وراء قلبه و قلب الاحمق وراء لسانه.

"अक़्लमंद की ज़ुबान उसके दिल के पीछे होती है, जबकि अहमक़ का दिल उसकी ज़ुबान के पीछे होता है।"

(47)

العلم خير من المال.

"इल्म दौलत से बेहतर है।"

(48)

العلم يحرسک وانت تحرس المال.

"इल्म तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है जबकि दौलत की हिफ़ाज़त तुम करते हो।"

(49)

العلم حاكم و المال محكوم عليه.

"इल्म हुकूमत करता है जबकि दौलत पर हुकूमत की जाती है।"

(50)

أقل الناس قيمة أقلهم علما.

"सबसे कमक़ीमत इंसान वह है जिसमें इल्म कम हो।"

(51)

الصبر من الايمان بمنزلة الرأس من الجسد.

"ईमान के लिए सब्र की वही एहमियत है जो जिस्म के लिए सर की है।"

(52)

لا خير فى عبادة لا علم فيها و لا خير فى علم لا فهم معه ولا قراء ة لا تدبر فيها.

"इल्म के बग़ैर इबादत में कोई रूहानियत नहीं, फहम के बग़ैर इल्म में कोई अफ़ादियत नहीं और तदब्बुर के बग़ैर तिलावत-ए-क़ुरआन-ए-पाक में कोई बरकत नहीं।"

(53)

من أراد أن ينصف الناس من نفسه فليحب لهم ما يحب لنفسه.

"जो शख़्स लोगों से अदल-ओ-इंसाफ़ का मुआमला करना चाहता हो उसे चाहिए कि उनके लिए वही पसंद करे जो ख़ुद अपने लिए पसंद करता है।"

(54)

سبع من الشيطان شدة الغضب وشدة العطاس وشدة التثاؤب والقئ والرعاف والنجوى والنوم عند الذكر.

“सात चीज़ें शैतान की तरफ़ से होती हैं: ज़ियादा गुस्सा, ज़ियादा प्यास, बार बार जम्हाई, क़ै **(Vomiting)**, नकसीर **(Hemorrhagh)**, कानाफूसी और ज़िक्र-ए-इलाही के वक़्त सोना।”

(55)

التوفيق خير قائد وحسن الخلق خير قرين والعقل خير صاحب والأدب خير ميراث ولا وحشة أشد من العجب

“तौफ़ीक़ अच्छा रहनुमा है, हुस्न-ए-अख़लाक़ बेहतरीन साथी है, अक़्ल अच्छा साथी है, अदब अच्छी मीरास है और ख़ुदपसंदी से बढ़ कर कोई वहशत नहीं।”

6. हज़रत अली ﷺ
के चंद मज़ीद फ़ज़ाइल और शहादत का तज़्किरा

→ गुजिश्ता सफ़हात में हज़रत अली ﷺ की फ़ज़ीलत से मुता'ल्लिक़ चालीस अहादीस का तज़्किरा किया गया है। आपके इल्म-ओ-फ़ज़्ल, ज़हद-ओ-तक़वा, ख़शीयत-ओ-इनायत, ऊलूलअज़्मी और बुलंद हिम्मती के इतने वाक़ियात कुतुब सीर-ओ-तराजिम में मौजूद हैं कि इस मुख़्तसर किताब में उनका ज़िक्र तो कुजा, उनकी तरफ़ इशारा भी नहीं किया जा सकता है। हुसूल-ए-बरकत और सवाब की ख़ातिर चंद फ़ज़ाइल का तज़्किरा मज़ीद किया जा रहा है, इसके बाद आख़िर में आपकी शहादत का बयान आएगा।

☆ फ़ज़ाइल-ए-अली ﷺ :

1. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ बयान करते हैं कि जब मक्का फतह हो गया तो रसूल-ए-अकरम ﷺ तायफ़ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। आप ﷺ ने तायफ़ का मुहासिरा सत्रह या उन्नीस रातों तक जारी रखा। इसके बाद आपने ख़ुत्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया: "मैं तुम लोगों को अपनी इतरत के बारे में वसीयत करता हूँ। तुम्हारी और मेरी वादगाह हौज़-ए-कौसर है। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम नमाज़ ज़रूर क़ायम करना और ज़कात ज़रूर अदा करना वरना **"मैं तुम्हारे पास एक ऐसा आदमी रवाना करूँगा जो मुझसे होगा या मेरे नफ़्स की मानिंद होगा। वह तुम्हारी गर्दनें उड़ा देगा।"** इसके बाद आपने हज़रत अली ﷺ का हाथ पकड़ कर फ़रमाया: **वह शख़्स यह है। (मुसन्निफ़ इब्न-ए-शैबा)**

2. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ बयान करते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ अपने मर्ज़-उल-मौत में एक दिन बाहर निकले और फ़रमाया: "ऐ लोगो! अनक़रीब मैं जल्दी इस दुनिया से रुख़सत हो जाऊँगा। मैं ने तुम्हारे सामने वह बात पेश कर दी है जिसके बारे में तुम्हें

उज़्र और माज़ेरत की कोई गुंजाइश नहीं है। तुम्हें यक़ीन होना चाहिए कि मैं तुम में दो चीज़ें छोडने वाला हूँ, अल्लाह ﷻ की किताब और अपनी इतरत जो मेरे अह्ल-ए-बैत ؑ हैं।" इसके बाद आप ﷺ ने हज़रत अली ؑ का हाथ पकड़ कर फ़रमाया: **"अली ؑ क़ुरआन के साथ हैं और क़ुरआन अली ؑ के साथ है,** ये लोग उस वक़्त तक जुदा न होंगे जब तक मेरे पास हौज़-ए-कौसर पर वारिद न हों। मैं इन दोनों के बारे में तुमसे सवाल करूंगा कि तुम लोगों ने इनके मुता'ल्लिक़ क्या रवैया इख़्तियार किया।" **(इब्नुल मुज़फ़्फ़र)**

3. हज़रत अली ؑ बयान करते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ ने मुझे नींद की हालत में पाया। अपने पैर से ठोकर लगाकर फ़रमाया: "उठो अल्लाह ﷻ की क़सम मैं इस बात पर बहुत राज़ी हूँ कि तुम मेरे भाई हो और मेरे फ़र्ज़न्दों के बाप हो, तुम मेरी सुन्नत पर जिहाद करोगे, जो शख़्स मेरे अहद पर मर गया वह जन्नत के ख़ज़ानों में होगा और जो शख़्स तुम्हारे अहद पर मर गया उस का अंजाम बख़ैर हुआ। जो **शख़्स तेरी मौत के बाद तेरी मुहब्बत पर क़ायम रह कर मर गया, अल्लाह ﷻ उसका ख़ात्मा अम्न ओ ईमान से करेगा** और यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहेगा जब तक सूरज तुलूअ और गुरूब होता रहेगा।"

4. हज़रत अली ؑ ने उन हज़रात से फ़रमाया जिनको हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ؓ ने शूरा का मेम्बर मुन्तख़ब किया था: एक तवील गुफ़्तगू के बाद उन्होंने कहा: "मैं तुम्हें अल्लाह ﷻ की क़सम दे कर दरियाफ़्त करता हूँ, क्या तुम में कोई ऐसा शख़्स है जिसके मुता'ल्लिक़ रसूल-ए-अकरम ﷺ ने मेरे सिवा यह फ़रमाया हो **कि तुम क़यामत के रोज़ जन्नत और दोज़ख़ के तक़सीम करने वाले हो?"** उन्होंने जवाब दिया: "नहीं।" **(दार कतनी)**

5. हज़रत आयशा ؓ बयान करती हैं कि औरतों में नबी-ए-अकरम ﷺ को सबसे ज़ियादा महबूब फ़ातिमा ؑ थीं और मर्दों में सबसे ज़ियादा महबूब उनके शौहर या'नी हज़रत अली ؑ थे। **(तिर्मिज़ी)**

6. एक बार हज़रत अली ﷺ को दूर से आता देख कर प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अरब के सरदार आ रहे हैं।” हज़रत आयशा ﷺ ने अर्ज़ किया: “क्या आप ﷺ अरब के सरदार नहीं हैं?” फ़रमाया: “मैं आलमीन का सरदार हूँ और अली ﷺ अरब के सरदार हैं।” (बैहक़ी)

7. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान करते हैं कि रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तमाम औलाद-ए-आदम का सरदार हूँ और अली ﷺ अरब के सरदार हैं।” (हाकिम)

8. हज़रत अली ﷺ की एक ज़िरह सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के मौक़े पर ग़ायब हो गई थी। आपने वह ज़िरह एक यहूदी के पास देखी, उसके ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दायर किया। आप ﷺ यहूदी को ले कर क़ाज़ी शरीह के पास गए। आप क़ाज़ी शरीह के पहलू में बैठ गए और फ़रमाया: “अगर मेरा मुख़ालिफ़ यहूदी न होता तो मैं मजलिस में इसके साथ बैठता। मैं ने रसूल-ए-अकरम ﷺ को फ़रमाते सुना है कि ज़िम्मी के साथ न बैठो।” आप ﷺने ज़िरह का दावा किया, ज़िम्मी ने इन्कार किया। क़ाज़ी शरीह ने हज़रत अली ﷺ से गवाह तलब किए। आप ﷺ ने गवाही के लिए क़म्बर ﷺ और हज़रत हसन ﷺ को पेश किया। क़ाज़ी शरीह ने कहा: “बेटे की गवाही बाप के हक़ में जायज़ नहीं है।” यहूदी ने कहा कि “अमीरुल मो'मिनीन ﷺ मुझे अपने क़ाज़ी के पास फ़ैसले कि ख़ातिर ले गए हैं और आपके क़ाज़ी ने आपके ख़िलाफ़ फ़ैसला किया है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह ﷻ के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ के रसूल हैं। ऐ अमीरुल मो'मिनीन ﷺ! यह ज़िरह आपकी है।”

9. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान करते हैं कि हज़रत अली ﷺ के पास चार दिरहम थे। आपने एक दिरहम दिन को, दूसरा दिरहम रात को, तीसरा दिरहम छुपा कर और चौथा दिरहम अलल ऐलान राह-ए-ख़ुदा में सदक़ा कर दिया, हालांकि इन चारों दिरहमों के अलावा आपके पास कुछ नहीं था। अल्लाह ﷻ ने उस पर यह

आयत नाज़िल फरमाई:

الذين ينفقون اموالهم بالليل والنهار سراً وعلانية فلهم أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولاهم يحزنون.

(واقدی)

10. जब हज़रत अली ﷺ को मालूम हुआ कि हज़रत अमीर मुआविया ﷺ शाम की हुकूमत पर फ़ख़्र का इज़हार करते हैं तो आप ﷺ ने अपने गुलाम को बुला कर कहा कि लिखो और फिर ये अशआर इरशाद फ़रमाए:

محمد النبی أخی وصهری وحمزة سيد الشهداء عمی

→ "नबी अकरम हज़रत मुहम्मद ﷺ मेरे भाई और मेरे ख़ुसर हैं और सैयदुश्शोहदा हज़रत हमज़ा ﷺ चचा हैं।"

وجعفر الذی يضحی ويمسی يطير مع الملائكة ابن امی

→ "वह जा'फ़र ﷺ जो सुबह-ओ-शाम फ़रिश्तों के साथ उड़ते रहते हैं, मेरी माँ के फ़र्ज़न्द हैं।"

وبنت محمد سكنی وعرسی منوط لحمها بدمی ولحمی

→ "हज़रत मुहम्मद ﷺ की साहिबज़ादी मेरी अहल-ए-ख़ाना और बीवी हैं। उनका गोश्त मेरे गोश्त और ख़ून से पैवस्त है।"

وسبطا أحمد ولدای منها فأيكم لـه سهم كسهمی

→ "मेरे दोनों बेटे हज़रत हसन ﷺ और हज़रत हुसैन ﷺ जो नवासा-ए-रसूल ﷺ हैं उन्हीं के बतन से हैं। तुम में से किसको मेरे जैसी सआदत हासिल है।"

سبقتكم إلى الاسلام طرا غلاما ما بلغت أوان حلمی

→ "मैं दायरा-ए-इस्लाम में उस वक़्त दाख़िल हुआ जबकि एक तिफ़्ल-ए-मासूम था, सिन-ए-रश्द में शामिल नहीं हुआ था।"

واوجب بالولاية لي عليكم   رسول الله يوم غدير خم

→ "रसूलल्लाह ﷺ ने ग़दीर ख़ुम के मक़ाम पर मेरी विलायत तुम्हारे ऊपर वाजिब कर दी।"

فويـل ثـم ويـل ثـم ويـل   من يلقى الالـه غدا بظلمى

→ "हलाकत है फिर हलाकत है और हलाकत है उस शख़्स के लिए जो कल अल्लाह ﷻ से इस हाल में मिलेगा कि मुझ पर ज़ुल्म कर रखा होगा।"

→ **इमाम बैहक़ी** رحمه الله ने कहा: **"हर मोमिन पर वाजिब है कि इन अशआर को याद करे, ताकि उसको हज़रत अली** رضي الله عنه **की वह बरतरी मालूम हो जो आपको इस्लाम में हासिल है।"**

→ हज़रत अली رضي الله عنه के मनाक़िब और फ़ज़ाइल इस क़दर ज़ियादा हैं कि उनका शुमार नहीं किया जा सकता।

→ एक मर्तबा हज़रत अली ﷺ से आयत

آیت رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ مِنْهُمْ مَنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَنْ يَّنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا٥

के मुता'ल्लिक़ दरियाफ़्त किया गया। आप उस वक़्त कूफ़ा की मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे। फ़रमाया: "ऐ अल्लाह ﷻ! मुझे बख़्श दे। यह आयत मेरे बाप, मेरे चचा हमज़ा और मेरे इब्न-ए-अम्म उबैदा बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब ﷺ के बारे में नाज़िल हुई है। उबैद ﷺ जंग-ए-बद्र में शहादत पा कर दुनिया से रुख़सत हो गए और हमज़ा ﷺ जंग-ए-उहद में शहादत पा कर दुनिया से रुख़सत हो गए, एक मैं ही बाक़ी हूँ जो इस उम्मत के बदबख़्ततरीन आदमी का इंतज़ार कर रहा हूँ, जो इस को इस से ख़िज़ाब आलूद करेगा।" हज़रत ने अपने हाथ से अपनी रेश मुबारक और अपने सर की तरफ़ इशारा किया। हज़रत अली ﷺ ने फ़रमाया: "यह बात मुझे मेरे महबूब अबुल क़ासिम ﷺ ने बताई थी।"

→ हज़रत अली ﷺ एक रात इमाम हसन ﷺ, एक रात इमाम हुसैन ﷺ, और एक रात अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ﷺ के यहाँ रोज़ा इफ़्तार फ़रमाया करते थे और तीन लुक़्मों से ज़ियादा तनावुल नहीं फ़रमाते थे और कहा करते थे कि मैं इस बात को ज़ियादा पसंद करता हूँ कि अल्लाह ﷻ से गुरसिना शिकम हो कर मुलाक़ात करूँ। जिस रात की सुबह को आपको क़त्ल किया गया था, आप उस रात अक्सर बाहर तशरीफ़ ले जाते थे और आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर देखते थे और फ़रमाते थे: "अल्लाह ﷻ की क़सम! मैं ने कभी झूठ नहीं बोला और न कभी मेरी कोई बात झूठी साबित हुई। यह रात तो वही है जिस का मुझसे वादा किया गया था।"

शब-ए-जुमा **17**/ रमज़ानुल मुबारक, चालीस हिजरी की रात को हज़रत अली ؓ सहर के वक़्त बेदार हुए और अपने फ़र्ज़न्द इमाम हसन ؓ से फ़रमाया: "आज रात ख़्वाब में मैं ने रसूलल्लाह ﷺ को देखा है। ख़्वाब में अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह ﷺ ! जो तकालीफ़ मैं ने इस उम्मत से उठाई हैं, उनकी आपसे शिकायत करता हूँ।" आप ﷺ ने फ़रमाया: "उनके ख़िलाफ़ बददुआ कीजिये।" मैं ने कहा: "ऐ अल्लाह ﷻ! मुझे उन लोगों के बदले अच्छे लोग अता कर और उनको मेरी जगह पर कोई बुरा आदमी अता फ़रमा।" इसके बाद आप ؓ नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गए। आपकी ख़िदमत में बतख़ें बढ़ीं, वे आपको देख कर चीख़ें मार रही थीं। आपने उनको हटाया और फ़रमाया: "उनको अपने हाल पर रहने दो, ये नौहागर हैं।" मस्जिद में तशरीफ़ लाए, लोगों से फ़रमाया: "नमाज़! नमाज़! नमाज़!" इतने में इब्न-ए-मुलजिम ने आप पर तलवार का वार किया, जो आपकी पेशानी मुबारक से सर के अगले हिस्से तक लगा। आप **19** रमज़ान **40** हिजरी की रात को इंतेक़ाल फ़रमा गए। आप ؓ को इमाम हसन ؓ ने गुस्ल दिया। इमाम हुसैन ؓ, अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र ؓ, और मुहम्मद बिन हनफ़िया ؓ पानी डाल रहे थे। आपको तीन कपड़ों में कफ़न दिया गया। जिनमें क़मीस नहीं थी। इमाम हसन ؓ ने सात तकबीरों के साथ आप पर नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ी। रात के वक़्त दफ़्न करके आपकी क़ब्र-ए-मुबारक को पोशीदा रखा गया ताकि आपके दुश्मन आपकी क़ब्र को खोद न सकें।

→ हज़रत अली ؓ को जब तलवार का ज़ख़्म लगा तो आपने हज़रत हसन ؓ और हज़रत हुसैन ؓ को वसीयत फ़रमाई, फ़रमाया: "मैं तुम्हें अल्लाह ﷻ के तक़्वा की वसीयत करता हूँ, दुनिया में बग़ावत न करना, अगरचे दुनिया तुम्हारे ख़िलाफ़ बग़ावत करे। अगर दुनिया की कोई चीज़ तुम्हारे हाथ से चली जाए तो उस पर गिरिया न करना। हक़ बात कहना, यतीम पर रहम करना, कमज़ोर की मदद करना, आख़िरत के लिए सामान तैयार करना, ज़ालिम का दुश्मन बनना और मज़लूम की इमदाद करना, अल्लाह ﷻ की रज़ाजूई के लिए काम करना,

अल्लाह ﷻ के बारे में मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करना।"

→ इसके बाद आपने अपने फ़र्ज़न्द मुहम्मद बिन हनफ़िया ؓ की तरफ़ देखा और उनसे फ़रमाया: "क्या तुमने वह बात याद कर ली है जिसकी मैं ने तुम्हारे भाइयों को वसीयत की है।" अर्ज़ किया: "हाँ," फ़रमाया: "तुम्हें भी ऐसी वसीयत करता हूँ और तुम्हें तुम्हारे भाइयों की इज़्ज़त करने की वसीयत करता हूँ। उन दोनों का तुम पर बड़ा हक़ है, इन के बग़ैर किसी और अम्र पर क़ायम न हो जाना।"

→ इसके बाद हस्नैन ؓ से फ़रमाया: "मैं तुम दोनों को इनके बारे में वसीयत करता हूँ। ये तुम्हारे भाई हैं और इस बात का तुम्हें इल्म है कि तुम्हारे बाप इनको अज़ीज़ रखते हैं।" इसके बाद आपकी ज़ुबान-ए-मुबारक से **"ला इलाहा इल्लाह"** के अलावा कुछ न निकला और आप इंतक़ाल फ़रमा गए।

کلامِ علی کرم اللہ وجہہ

ياحملة القرآن! إعملوا به فإن العالم من
عمل بما عمل و وافق عمله عمله و سيكون
أقوام يحملون العلم لا يجاوز تر اقيهم تخالف
سريرتهم علا نيتهم و يخالف عملهم عملهم
يجلسون حلق فيباهى بعضهم بعضا حتى إن الرجل
يغضب على جليسه ألى غيره و يدعه.
أولئک لا تصعد أعمالهم في مجالهم تلک إلى
الله، ولا يخافن أحد منكم إلا ذنبه ولا يرجوا
إلاربه ولا يستحى من لا يعلم أن يتعلم
ولا يستحى من يعلم إذا سئل عما
لا يعلم أن يقول: الله أعلم.

IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION
(Ahl-e-Sunnah)

Founder & Chairman :
Dr. Shahezadhusain Yasinmiya Kazi
Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)
Mo. 85110 21786